

वार्तालाप 889, हंसारी-1 (झांसी, उ.प्र.), ता. 27.11.09
Disc.CD No.889, dated 27.11.09 at Hansari-1 (Jhansi, U.P)

समय: 05.02-08.39

जिज्ञासु— बाबा, बाप कहते हैं कि जो घर में बैठे पुरुषार्थ करे, कर्मातीत अवस्था को तो पाने को हो सकता है; मुक्ति में जाये, जीवनमुक्ति में न जा सके।

बाबा— घर में बैठे जो पुरुषार्थ करेंगे वो जीवनमुक्ति में जा कर के प्रजा नहीं बनेंगे? बाप की प्रजा भी बनती है, बाप के वारसदार भी बनते हैं। वारसदार वो बनते हैं जो समर्पित होते हैं सिर्फ ईश्वरीय सेवा के लिए। दुनियावी धंधे-धोरी खत्म हो गये। जो बाप का धंधा सो बच्चों का धंधा और जो घर में बैठ करके पुरुषार्थ करते हैं वो ऊँच पद भले नहीं पावेंगे लेकिन प्रजा वर्ग में बड़े-बड़े साहूकार तो बन सकते हैं। और 16000 की लिस्ट में तो ऐसे-ऐसे भी हैं जो भाग जाते हैं, बाप को धोखा दे जाते हैं, धमककर मचाते हैं, बाप की ग्लानि करते हैं; ऐसे दास-दासी बनते हैं। उन दास-दासी बनने वालों से तो अच्छा अपने घर-गृहस्थ में रह करके खूब कमाई करो, ईश्वरीय यज्ञ में अर्पण करो। धन अर्पण करेंगे तो बड़े-बड़े साहूकार बनेंगे। ज्ञान धन अर्पण करेंगे तो भी बड़े साहूकार बनेंगे।

Time: 05.02-08.39

Student: Baba, the Father says: those who make *purusharth* (spiritual effort) at home can achieve the *karmaateet* stage (stage beyond the effect of actions), they can achieve liberation (*mukti*) but not liberation in life (*jeevanmukti*).

Baba: Will those who make *purusharth* while sitting at home not become subjects (*praja*) after achieving *jeevanmukti*? The Father has subjects as well as heirs. Those who dedicate themselves only for Godly service become heirs. The worldly businesses end [for them]. Whatever is the Father's business is the children's business. And those who make *purusharth* sitting at home may not achieve a high post, but they can indeed become great merchants in the subjects category. And in the list of the 16000 [beads] there are also such souls who run away, who deceive the Father, who cause disturbances, who defame the Father; such ones become maids and servants. Instead of becoming servants and maids it is better to live in the household and earn a lot and dedicate it in godly *yagya*. If you dedicate your wealth you will become great merchants. You will become great merchants if you dedicate the wealth of knowledge as well.

तो क्या बिना अर्पण हुए ये सब नहीं कर सकते? चलो ऊँच पद नहीं पावेंगे, राज घराने में जन्म नहीं लेंगे लेकिन बड़े-बड़े साहूकारों के घर में दास-दासियाँ होते हैं कि नहीं? उनके बड़े-बड़े महल होते हैं, राजाओं जैसे टाट-बाट होते हैं और राज दरबार लगता है तो राजाओं के नजदीक जा करके बैठते हैं। ये कम बात है क्या? बाकी ऐसा नहीं है कि जो घर-गृहस्थ में रहेंगे, घर-गृहस्थ में रह करके अच्छा पुरुषार्थ करेंगे वो जीवनमुक्त पद नहीं पावेंगे। प्रजा भी जीवनमुक्त पद पाती है। ये जीवन में रहते हुए ही दुःख-दर्दों से मुक्त हो जाती है। यथा राजा तथा प्रजा; ये संगमयुग का ही गायन है। और युगों का इतना गायन नहीं है। संगमयुग में जब बाप आ कर स्वर्णिम संगमयुग की स्थापना करते हैं तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्', सारी वसुधा बाप का परिवार है। बाप के बच्चे जैसे बाप की गोद के बच्चे हैं। इतना प्यार और कोई दे ही नहीं सकता। और राजायें तो अपने राजमहल में पलने वाले बच्चों से प्यार करेंगे लेकिन बाप तो ऐसी राजाई आ कर देते हैं जो राजा सारी प्रजा को अपना बच्चा समझती है।

So, can't you do all this without being surrendered? OK, you may not achieve a high post, you may not be born in a royal family, but are there servants and maids in the homes of great merchants or not? They have big palaces; they have luxuries like the kings and when the king's court is organized they go and sit close to the king. Is this any less achievement? But it

is not so that those who live in a household, those who make good efforts while living in a household will not achieve *jeevanmukti* post. The subjects also achieve *jeevanmukti* post. They become free from sorrow and pain while being alive. As is the king so are the subjects – this is a glory of the Confluence Age itself. Other ages are not so glorious; When the Father comes in the Confluence Age and establishes the Golden Confluence Age, then it is '*vasudhaiv kutumbkam*', i.e. the entire Earth is the Father's family. The Father's children are like the children of Father's lap. Nobody can give them such love. Other kings will love the children who grow up in the palace, but the Father gives such kingship when He comes that the king considers all the subjects (*praja*) to be his progeny.

समय: 13.55–16.12

जिज्ञास— अपने को जो हिंदु धर्म बोलने लगते हैं, आदि सनातन देवी-देवता धर्म भूलके , ये भूल बेहद में कैसे ?

बाबा— इसका बेहद में अर्थ ये है; बेहद तो ब्राह्मणों की दुनिया में है ना। ब्राह्मणों की दुनिया में जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाऊंडेशन डालने वाले सूर्यवंशी नहीं हैं, हैं कि नहीं ऐसे? ब्राह्मणों की दुनिया में 9 कुरी के ब्राह्मण हैं; सब सूर्यवंशी हैं क्या? सब तो सूर्यवंशी नहीं हैं। तो जो सूर्यवंशी असल में नहीं हैं, वो कहते हैं, हम हिंसा को दूर करने वाले हैं। हिंसा है काम विकार की। वो बी.के. वाले उनमें मुख्य हैं। क्या? जो चंद्रमा, ज्ञान चंद्रमा की गोद में पले हैं; चंद्रवंशी, इस्लामी, बौद्धी, किश्चियन, वो सारे ही चंद्रमा की गोद में पले हुए कुखवंशावली ब्राह्मण, वो कहते हैं, हम हिंसा को दूर करने वाले हैं और ये सूर्यवंशी जो हैं ना, वो हिंसा को बढ़ाने वाले हैं। कौनसी हिंसा? अरे बाबा ने कौनसी हिंसा बतायी खास? काम विकार की हिंसा। तो हम हिंसा को दूर करने वाले माने 'हिं दु' – असली हिंदु हम हैं। जो हिंसा को दूर करे सो हिंदु और जो हिंसा को बढ़ाये, वो हिंदु नहीं। तो सूर्यवंशी क्या हो गये? बंदर सम्प्रदाय हैं ना सब; बंदरों में तो विकार जास्ती होते हैं, इसलिए ये सब बंदर हैं। ये विकारों को बढ़ाने वाले हैं। और सच्चे हिंदु तो हम हैं। ये बेहद का अर्थ है। यहाँ फाऊंडेशन पड़ता है, फिर वहाँ भक्तिमार्ग में विराट रूप में चलती है बात।

Time: 13.55-16.12

Student: We forget the Adi Sanatan Devi Devta dharm (the Ancient Deity Religion) and start calling ourselves Hinduism. How does this mistake happen in the unlimited sense.

Baba: In an unlimited sense it means, the world of Brahmins is in an unlimited sense, isn't it? Those who are not Suryavanshi (those belonging to the Sun dynasty) who lay the foundation of *Aadi sanaatan devi devta dharm* in the world of Brahmins; are there such ones or not? There are nine categories of Brahmins in the world of Brahmins; are all of them *Suryavanshi*? All are certainly not *suryavanshis*. So, those who are not actually *Suryavanshi* say that they are the ones who stop violence (*hinsa*). Violence is [the violence] of lust. The BKs are the main among them. What? Those who have received sustenance in the lap of the Moon of knowledge, the *Chandravanshis*, the Islamic people, the Buddhists, the Christians; all of them who are womb-born progeny Brahmins who have received sustenance in the lap of the Moon say that they are the ones who prevent violence and these *Suryavanshi* are the ones who increase violence. Which violence? Arey which violence has Baba mentioned especially? The violence of lust. So, 'we are the ones who stop violence' meaning '*Hin doo*', 'we are the true Hindus'. Those who stop (*door karey*) violence (*hinsa*) are Hindu and those who increase violence are not Hindu. So, what are *Suryavanshi*? All belong to the monkey community, don't they? Monkeys have more vices; this is why all of them are monkeys. They increase vices. And we are the true Hindus. This is the meaning in an unlimited sense. The foundation is laid here; then there it takes place in a broader form in the path of worship.

समय: 23.15

जिज्ञासु— बाबा, कहते हैं 12 राशियाँ होती हैं। कहते हैं कि किसी पे साढ़े सातिया लगा है या फिर कोई राशियाँ अच्छी चल रही हैं, तो इसका बेहद में अर्थ क्या होता है?

बाबा— 12 राशियों का मतलब ये है कि दुनिया के जितने भी मनुष्य हैं, वो 12 कटेगरी में से कोई एक कटेगरी के होते हैं। कौनसी 12 कटेगरी? माला है 108 की। 108 की माला के जो मणके हैं, वो 9 गुप में बाँटे गये हैं, 9 धर्मों में। ऐसे 9 धर्म जो भगवान से कुछ न कुछ प्राप्त करते हैं; सूर्यवंश, चंद्रवंश, इस्लामी, बौद्धी, किश्चियन वगैरा लेकर के। 9 गुप जो हैं, वो 12-12 के हैं। 12, 9 का गुना किया, कितना आया? 108। माना 12-12 के 9 गुप हैं, जो बाबा कहते हैं, ब्राह्मणों की 9 कुरियां हैं। तो फर्स्ट कुरी भी कोई होगी? वो फर्स्ट कुरी है सूर्यवंशियों की। उस सूर्यवंशियों की फर्स्ट कुरी में भी, 12 हैं पहले मणके। वो पहले जो 12 मणके सूर्यवंशी हैं, सारी दुनिया उन्हीं की औलाद है। क्या? किसकी औलाद है? उन 12 की औलाद है। इसलिए, सारी दुनिया की हर मनुष्य आत्मा को उन 12 में से कोई न कोई एक राशि का माना जाता है।

Time: 23.15

Student: Baba, it is said that there are 12 zodiac signs. It is said that someone is suffering from *saadhey saatiya*¹ (bad planetary influence) or that someone is passing through good zodiac signs. So, what does it mean in an unlimited sense?

Baba: The meaning of 12 zodiac signs is that all the human beings in the world belong to one of the 12 categories. Which are the 12 categories? The rosary is of 108 [beads]. The beads of the rosary of 108 have been distributed into 9 groups, 9 religions. They are such 9 religions which achieve something or the other from God, *Suryavansh*, *Chandravansh*, Islamic people, Buddhists, Christians etc. The 9 groups are of 12 each. If you multiply 12 by 9 what will you get? 108. It means that there are 9 groups of 12 each for which Baba says that there are 9 categories of Brahmins. So, there will be a first category as well? That first category is of *Suryavanshis*. Even among the first category of *Suryavanshis*, 12 are the first beads. The entire world is the progeny of those first 12 *Suryavanshi* beads. What? Whose progeny are they? They are progeny of those 12. This is why every human soul of the entire world is considered to belong to one of those 12 zodiac signs.

अब रही साढ़े साती की बात; तो उन 12 राशियों में एक ऐसा भी है जो शनिदेव कहा जाता है। शनिदेव तो नहीं है लेकिन उसका बीज है सूर्यवंशियों में। उस शनिदेव का भी बाप कौन है? सूर्य। सूर्य जो है, वो शनिदेव का भी बाप है। लेकिन उन बाप-बेटे में हमेशा झगड़ा रहता है। जो सूर्य, उसकी है उसकी राशि देवताओं के गुरु बृहस्पति से मिलाई जाती है, तो कहते हैं बृहस्पति की दशा। अच्छे ते अच्छी दशा। परंतु अगर उसमें शनि की साढ़े साती लग गयी तो खतरा पैदा हो जाता है। मतलब क्या हुआ? मतलब ये हुआ, उस सूर्य को कोई फॉलो करे, सूर्य की छत्रछाया में रहे तो किसकी दशा कही जाएगी? सूर्य की, बृहस्पति की दशा कही जाएगी। अगर सूरज की छत्रछाया में से निकल कर के शनि की छाया में आ जाए और शनि की छाया में साढ़े साती पकड़ ले; उसके दो शिश्य हैं। साढ़े साती और ढैय्या। उनके कंट्रोल में आ जाए। सूर्य की छत्रछाया से निकल जाए तो सत्यानाश होगा या अच्छा होगा? सत्यानाश हो जाता है।

Well, as regards the issue of *saadhey saati*, there is also one such zodiac sign among the 12 zodiac signs which is called Shanidev. It is not Shani *dev* (a deity), but it is its seed among the *Suryavanshis*. Who is the father of that Shanidev as well? Sun. Sun is the Father of *Shanidev* as well. But there is always a fight between the father and the son. When the zodiac

¹ meaning the bad planetary influence of Saturn for 7 ½ years (saadhe saati)

sign of Sun is matched with that of *Guru Brihaspati*, the guru of deities, then it is said that there is an influence of *Brihaspati* (Jupiter). The best influence. But if there is *saadhey saati* of *Shani* (Saturn) in that, then there arises danger. What does it mean? It means that if someone follows Sun, if someone remains under the canopy of Sun, then whose influence will it be called? It will be called the influence of *Brihaspati*. If someone comes out of the canopy of Sun and comes under the shadow of *Shani*, and if they are affected by *saadhey saati* under the shadow of *Shani*...; he has two disciples. *Saadhey saati* (7 ½) and *dhaiyya* (2 ½). If he comes under their control, if he comes out of the canopy of Sun then will it bring ruin or will it be good? It brings ruin (*satyaanaash*).

तो ये संग का रंग यहाँ हम ले रहे हैं। वृक्षपति की दशा में से निकल करके कोई न कोई गुरु के प्रभाव में आ जाते हैं। वो गुरु साढ़े साती जैसा भी हो सकता है, दैव्या जैसा भी हो सकता है। राहु जैसा भी हो सकता है। शनि की दशा से भी ज्यादा खराब दशा किसकी मानी जाती है? राहु की दशा। बहुत भयंकर दशा है। तो ऐसे के प्रभाव में अगर आ जाते हैं तो सत्यानाश हो जाता है। ये संग का रंग यहाँ लगता है या नहीं लगता है? ब्राह्मणों की दुनिया में रज-रज के एक-दूसरे से बातें करते हैं। जब बातें करते हैं तो अपने दिल की सारी भढास उसके सामने निकाल देंगे। बाबा को नहीं बतायेंगे पूरा पोतामेल, किनको बतायेंगे? उनको बतायेंगे। तो उनके सारे दुर्गुण भी खुद ले लेंगे, अपने सारे दुर्गुण भी उनको दे देंगे; तो किसकी दशा बैठेगी? देहधारियों की ही दशा बैठेगी ना। इसलिए बताया कि दुनिया में 12 तरह के लोग हैं जो 12 राशियों में गिने जाते हैं। राशि कोई भी हो, लेकिन उस राशि का होते हुए भी अगर संग का रंग खराब लग जाता है तो राशि के उपर असर राहु का पड़ जाता है, शनिदेव का पड़ जाता है, किसी दूसरे ग्रह-उपग्रह का असर पड़ जाता है। संग तारे, कुसंग बोरे।

So, we are being coloured by this company here. We come out of the influence of *Vrikshapati* and come under the influence of some or the other guru. That guru can be like *saadhey saati* or like *dhaiyya*. He can also be like Rahu (one of the nine principal planets considered to be evil). Whose influence is considered to be worse than the influence of *Shani*? Rahu's influence. It is a very dangerous influence. So, if we come under the influence of such ones then it brings ruin. Are you coloured by such company here or not? Some [children] talk with each other very intimately in the world of Brahmins. When they talk, they pour their heart out in front of that person. They will not give the entire *potamail* to Baba; whom will they narrate it to? They will narrate it to that person. So, they will accept all their bad traits as well as give all their bad traits to them. So, by whom will they be influenced? They will be influenced by the bodily beings themselves, will they not? This is why it was said that there are 12 kinds of people in the world who are categorized into 12 zodiac signs. It may be any zodiac sign, but despite belonging to that zodiac sign, if you are coloured by bad company, then that zodiac sign comes under the influence of Rahu, *Shanidev* or of any other planet or satellite. Good company takes you across and bad company drowns you.

समय— 47.52—51.41

जिज्ञासु— शाम के 7 बजे से 8 बजे तक याद रहती है, गीता पाठशाला में। तो फिर उसके बाद कहते हैं कि रात के 9, 10 बजे जाए तो बाबा को याद नहीं किया जाता। तो जैसे अगर याद आती है, नींद न आए, बैठे याद करना हो तो कर नहीं सकते हैं क्या?

बाबा— ये बताया कि रात के 11-12 बजे से ले कर के और रात के 1-2 बजे तक सारी दुनिया के मनुष्य मात्र ज्यादा से ज्यादा परसेन्टेज में विकार भोगते हैं। तो दुनिया का वायुमण्डल खराब होता है। उस खराब वायुमण्डल में बाबा को याद करने से उतना फायदा नहीं होगा और भूत-प्रेत आत्मार्ये भी जो प्रवेश कर के धमक्कर मचाती हैं, वो भी रात के

12-1-2 बजे तक धमचक्कर मचायेंगी। अमृतवेला शुरू होता है और वो भाग जाते हैं। इसलिए वातावरण के अनुसार अपना पुरुषार्थ कर लेना चाहिए। अमृतवेला है तो खूब पुरुषार्थ करो। जब भूत-प्रेतों का टाइम है तो जैसे पहाड़ पर चढ़ते हैं, जोर से आंधी आयी, तूफान आया, तो क्या चढ़ते रहते हैं? (किसी ने कहा— उतर जाते हैं।) नहीं, नहीं कहीं पहाड़ के नीचे शेल्टर ले लेते हैं; शरण ले लेते हैं शिला के नीचे, गुफा में, तो फायदा होता है। आगे चढ़ने की सम्भावना होती है।

Time: 47.52-51.41

Student: 'Remembrance' (meditation) is conducted in the *gitapathshala* from 7 to 8 PM. But it is also said that we should not remember (Baba) after 9, 10 PM. So, if we wish to remember, if we are not feeling sleepy, if we wish to sit and remember, can't we do so?

Baba: It was said that from 11-12 PM to 1-2 AM maximum percentage of people of the entire world indulge in lust. So, the atmosphere of the world is bad (at that time). You will not reap much benefit if you remember Baba in that bad atmosphere. And the souls of ghosts and spirits also enter (human beings) and create trouble/; they will also create trouble till 12 midnight, 1 - 2 AM in the night. As soon as the *amritvela* (early morning hour) begins, they run away. This is why we should make our *purusharth* according to the atmosphere. When it is *amritvela*, make a lot of *purusharth*. And when it is the time for ghosts and spirits, then; for example, people climb mountains, and if there is a big storm [or a] tufan, do they continue to climb? (Someone said: they come down). No, no, they take shelter under some mountain. They take shelter under a rock, in a cave; then they are benefited. There is a possibility for them to climb up further.

तो वो भूत-प्रेतानी टाइम है। कौनसा? रात के 10-11-12 बजे से लेकर 12-1-2 तक का। इसलिए बोला कि गीता पाठशालाओं में जो क्लास होता है, वो शाम का क्लास 6 बजे से रखना चाहिए। 6 से 7 नहीं, 6 से साढ़े छः तक संगठन की याद। ज्यादा बैठ कर के याद में बैठना वो भी खतरनाक है। क्योंकि सबकी अवस्था एक जैसी नहीं होती है। संगठन में वायब्रेशन बिगड़ सकता है ज्यादा लम्बे समय बैठने से। तो बस आधा घण्टा याद। हाँ, बाबा बैठे हैं तो अवस्था अच्छी बन जाती है। वो 1 घण्टा क्या, 1½ घण्टे, 2 घण्टे बैठे रहो। माउन्ट आबू में तो 24 घण्टे भी बैठे रहेंगे। वो बात अलग, लेकिन जो अत्मार्ये हैं उनकी अवस्था एक जैसी नहीं होती है। इसलिए शाम का क्लास अथवा सुबह का क्लास, आधा घण्टे संगठन में बैठने का अच्छा है। उसके बाद एक घण्टा मुरली सुनी और घर भागे। साढ़े सात तक थोड़ा-थोड़ा झुट-पुटा रहता है। कन्यार्ये-मातार्ये बाहर से आती हैं, जमाना अच्छा नहीं है; गुंडे-गर्दी का जमाना है, इसलिए रात होते-होते अपने घर में पहुँच जायें।

So, that is a time for ghosts and spirits. Which time? From 10-11-12 PM to midnight-1-2 AM. This is why it was said that the class that takes place at the *gitapathshalas*, that evening class should be organized from 6 PM. There should be a collective remembrance not from 6-7 PM, but from 6-6.30 PM. Sitting for a longer period in remembrance is also dangerous because everybody's stage is not alike. The vibrations may spoil by sitting in remembrance for a longer period in a gathering. So, just half an hour remembrance (is enough). Yes, when Baba is sitting, the stage becomes good; in that case you can sit not just for 1 hour, but even for 1 and a half hours or two hours. In Mount Abu you will sit even for 24 hours. That is a different subject. But the souls do not have a uniform stage. This is why it is better to sit in remembrance for half an hour either in the evening class or in the morning class. After that listen to the Murli for an hour and run home. Until 7.30 PM there is some light. The virgins and mothers come from outside, the times are not good; these are times of goons; this is why you should reach home before it is night.

समय— 51.41—54.57

जिज्ञासु— बाबा, जैसे गीता पाठशाला गाँव-गाँव चल रही है। तो क्या हर गाँव में जाकर संगठन करना जरूरी है? जैसे वातावरण वहाँ का सही नहीं है, महौल वहाँ का नहीं सही है, तो क्या वहाँ का खान-पान, वहाँ जाना सही है?

बाबा— कन्याओं-माताओं को ज्यादा भटकाना ठीक नहीं है। दूर-दूर गाँवों में गीता पाठशालायें हैं और कन्यायें-मातायें वहाँ भटकेंगी तो माया को मौका देने का हम चान्स दे रहे हैं कि नहीं दे रहे हैं? इसलिए शहरों में तो ठीक है। बड़े-बड़े कस्बे हैं, उनमें जो गीता पाठशालायें हैं; उन गीता पाठशालाओं में, कभी एक गीता पाठशाला में कभी दूसरी गीता पाठशाला में संगठन के प्रोग्राम रख दिये जाये तो चलेगा। नजदीक-नजदीक के गाँवड़े हैं, उनमें भी चल सकता है। लेकिन जो दूर-दूर के गाँवड़े हैं वहाँ भाई लोग जायें, संगठन करें। कन्याओं-माताओं को भटकाने की जरूरत नहीं है।

Time: 51.41-54.57

Student: Baba, for example, *gitapathshalas* are being run in every village. So, is it necessary to go and attend the gathering in every village? For example, if the atmosphere is not good there, is it okay to eat and drink or to go there?

Baba: It is not good to make the virgins and mother wander much. There are *gitapathshalas* in far-off villages and if the virgins and mothers wander there, then are we giving a chance to *maya* or not? This is why it is alright in cities. As regards the *gitapathshalas* situated in big towns, it is ok if you organize the gathering sometimes in one *gitapathshala* and sometimes in another *gitapathshala*. If the villages are located close to each other, then this can be done there too. But in case where the villages are situated far-off, the brothers may go and attend the gathering there. There is no need to make the virgins and mothers wander.

जिज्ञासु— बाबा जैसे कोई मेन पाठशाला है खुली हुई और चार पाठशालायें आसपास में खुली हुई हैं, तो वो लोग बोल रहें हैं हमारे यहाँ संगठन करो। तो ये 20-20 किलोमीटर, 15-15 किलोमीटर दूर है। तो जाते हैं तो हफ्ते में 4-5 दिन यहीं संगठन हो जाता है। मतलब ये है कि हफ्ते में अगर हम 6 दिन संगठन करते हैं

बाबा— सारी बातें सही। सारी बातें सही। लेकिन एक बात पर ब्राह्मणों को पक्का ध्यान देना है, 'सेफ्टी इज फर्स्ट'।

जिज्ञासु— लेकिन बाबा महीने में एक संगठन रख ली जाये सारी गीता पाठशालाओं में.....

बाबा— दूर-दूर गाँव में संगठन रखने से कन्याओं-माताओं को धोखा हो सकता है। बाँधेली कन्याओं-माताओं की संख्या ज्यादा है। जो मुखिया है उनकी तो वाह-वाही हो जाती है कि हमारे घर में संगठन हुआ। बाकी जो दूर-दूर से आने वाली मातायें-कन्यायें हैं, उनको फायदा होने के चान्सेस कम होते हैं।

Student: Baba, for example there is a main *gitapathshala* situated [at some place] and there are other four *gitapathshalas* running nearby so those people (from every *gitapathshala*) ask us to attend the gathering there. So, these [*gitapathshalas*] are 20 KMs, 15 KMs away. So, we go there we organize a gathering there for 4-5 days in a week there itself.I mean to say, if we attend a gathering for 6 days a week....

Baba: Everything is ok. Everything is ok. But the brahmins should pay attention to one thing certainly: "Safety is first".

Student: But Baba, if a gathering is organized once in a month in all the *gitapathshalas*...

Baba: If the gathering is organized in far-off villages, the virgins and mothers can fall into a trouble. The number of virgins and mothers in bondage is more. The head (of the concerned *gitapathshala*) garners the praise: the gathering took place at our home. As for the rest there is a lesser chance for the virgins and mothers coming from far off places to reap benefit.

जिज्ञासु— बाबा किसीको ये कहो कि भई संगठन एक जगह रखा जाए तो पाठशाला वाले लोग बोलते हैं कि ये लोग अपने मन से कह रहे हैं तो इसलिए फिर कभी-कभी वहाँ का वातावरण भी शुद्ध नहीं होता लेकिन चुप रहना पड़ता है।

बाबा— इसलिए संगठन के अन्त में सब मिल कर के फैसला कर लें कि अगला संगठन कहाँ होना ठीक है। चलो सब मिल कर के यही कहते हैं कि अमुक गाँव में होना ठीक है, तो कन्यायें—मातायें अपनी सेफटी कर लें, न जायें। अथवा कोई पक्की बुजुर्ग माता साथ में मिले तो जायें; नहीं तो न जायें।

Student: Baba, if we tell someone that the gathering should be organized at one place, then the people of the gitapathshala say that these people are speaking as per their mind; this is why sometimes.... the atmosphere over there is not good but we have to remain silent.

Baba: This is why everyone should take a collective decision after the gathering: it is better to organize the next gathering at which place? OK, if everyone says that it is better to organize a gathering in such and such village (which may be far-off), the virgins and mothers should ensure their own safety; they shouldn't go. Or they may go if they have a strong mature mother with them. Otherwise, they shouldn't go.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.